	बाँदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय **बाँदा - २१०००१ (उ0प्र0)**

मौसम आधारित कृषि सलाह (Agro-Weather Advisory Bulletin No.: 98/2024) Year: 6th	
जिला: बाँदा	**जारी करने की तिथि:** 18/01/2024

क्रम सं	विभाग	सलाह
1-	**शाक-भाजी**	➢ विलंब उत्पाद हेतु सब्जी मटर, मूली, पालक, गाजर, राई साग, फ्रेंचबीन की भी बुआई करें। ➢ टमाटर, बैगन, शिमला मिर्च/मिर्च तथा गोभी में सुखी घास अथवा प्लास्टिक मल्चिंग करके मृदा नमी संरक्षण एवं खरपतवार नियंत्रण किया जा सकता है। ➢ आलू की फसल को झुलसा रोग से बचाने के लिए नियमित जल प्रबंधन करें तथा डाईथेन एम -४५ का प्रयोग करे। ➢ खड़ी फसलों में उचित जल एवं खरपतवार प्रबंधन सुनिश्चित करे। ➢ अगेती रोपाई हेतु पॉलीबैग्स में कद्दुवर्गीय सब्जियों की बुआई कर लें ।
2-	**शस्य-प्रबंधन एवं मृदा-प्रबंधन**	**शस्य-प्रबंधन** ➢ जनवरी माह में ठण्ड का प्रकोप बहुत होता है, जिसके फलस्वरुप फसल ें नष्ट हो सकती है।फसलों को पाले से बचाने के लिये शाम के समय खेतों के आस–पास आग जलाकर धुआँ करना चाहिये, इससे तापमान नियंत्रित होता है तथा फसलें ठण्ड के प्रकोप से बच सकती है। ➢ गेंहू में सिचाई 25–30 दिनों के अन्तराल में निश्चित करें। इस समय सिंचाई अच्छी पैदावार के लिये अत्यंत आवश्यक है साथ ही जौ में भी सिचाई अवश्य करें। ➢ आमतौर पर जनवरी माह में सरसों में फलियाँ बनने लगती है, अतः खेत में नमी बनाये रखना अतिआवश्यक है। ➢ अन्य तिलहन एवं सभी दलहनी फसलों जैसे चना, मटर आदि में आवश्कतानुसार सिंचाई करें। ➢ समय–समय पर खरपतवार प्रबन्धन करें, इसके लिये हैंड हो की मदद ली जा सकती है। ➢ चनें में फूल पूर्व निपिंग(खुंटाई) का कार्य अवश्य ही पूर्ण कर लें। ➢ बरसीम, रिजका व जई की हर कटाई पर सिचाई अवश्य करें। **मृदाप्रबंधन-** **गेंहू–**गेंहू की फसल में 120.–60–40 किग्रा0 प्रति हे0 की दर से नत्रजन फास्फोरस तथा पोटाश का प्रयोग करना चाहिये। फास्फोरस तथा पोटाश की सम्पूर्ण मात्रा तथा नत्रजन की आधी मात्रा बुवाई के समय प्रयोग करना चाहिये।श्अगर एक सिंचाई उपलब्ध हो तोषेष आधी मात्रा बुवाई के 20–25 दिन बाद क्रन्तिक जड़ निकलने की

		अवस्था पर करना चाहिये। **गेंहू–** **अगर दो सिंचाई उपलब्ध हो** गेंहू की फसल में 120.–60–40 किग्रा0 प्रति हे0 की दर से नत्रजन फास्फोरस तथा पोटा**श** का प्रयोग करना चाहिये। फास्फोरस तथा पोटा**श** की सम्पूर्ण मात्रा बुवाई के समय प्रयोग करना चाहिये।शनत्रजन की शेष मात्रा को दो भागों में देना चाहिये एक भाग बुवाई के 20–25 दिन बाद क्रन्तिक जड़ निकलने की अवस्था पर करना चाहिये। तथा दूसरा भाग बुवाई के चालीस से पैतालिस दिन बाद कल्ले फूटने के अवस्था में देना चाहिये। **चना** देर से बोई गयी (15 नवम्बर से 15 दिसम्बर) या यह चने के पौधे की वृद्धि में कमी होने की दषा में एक प्रतिषत जलघुलनषील एनःपीःकेः मिश्रण का पर्णीय क्षिणकाव करने से फसल में वृद्धि अच्छी होती है।
3-	**पशुपालन प्रबंधन**	➢ सर्दियों में तापमान काफी गिर जाता है, जिससे पशुओं को काफी समस्याएं होती है, ऐसे में पशुपालकों को यह चाहिए, कि पशुओं को बांधने एवं बैठने वाले जगहों पर सफाई का विशेष ख्याल रखें तथा उन स्थानों को गीला होने से बचाएं। ➢ अपने पशुओं को धूप आने के बाद ही शेड से बाहर निकालें एवं शाम ढलने से पहले ही बाड़ों अथवा शेड में बाँध दें। ➢ दोपहर से पहले ही ताजे पानी से पशुओं को नहलाएं। कमजोर, छोटे अथवा बीमार पशुओं को नहलाने की बजाय सूखे कपडे या पुआल से रगड़ कर साफ सफाई करें। ➢ सर्दियों में पशुओं के खानपान का विशेष ध्यान रखना चाहिए, पशुपालक भाइयों को चाहिए कि अपने पशुओं को आहार में कम से कम २५ प्रतिशत हरा चारा तथा ७५ प्रतिशत बढ़िया सूखा चारा खिलाना चाहिए। पशुओं को सप्ताह में दो बार गुड़ अवश्य खिलाएं। ➢ बिनौला, खली, दाना, खनिज मिश्रण व सेंधा नमक भी पशु–राशन में नियमित तौर पर शामिल करें, जिससे की पशुओं की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ सके।
4–	**कीट–प्रबंधन**	➢ राई/सरसों में प्रारम्भिक अवस्था मे माँहू से प्रभावित फूलों, फलियों एवं शाखाओं को तोड़कर माँहू सहित नष्ट कर देना चाहिये। जैविक नियंत्रण एजाडिरैक्टिन (नीम ऑयल) 0.15 प्रतिशत ई0सी0 2.50 लीटर प्रति हे0 की दर से 600–700 ली. पानी में घोलकर छिड़काव करें। कीट के रासायनिक नियंत्रण हेतु इमिडाक्लोप्रिड 17.8 प्रतिशत एस0एल0 250 मिली0 की मात्रा को 600–750 लीटर पानी मे घोलकर छिड़काव करना चाहिये। ➢ चना/मटर/ मसूर में कटुआ कीट (कट वर्म) के जैविक नियंत्रण हेतु मेटाराइजियम एनिसोप्ली 2.5 किग्रा0 प्रति हे0 की दर से 400–500 लीटर पानी मे घोलकर सायंकाल छिड़काव करना चाहिये। फली बेधक के नियंत्रण हेतु फसल की नियमित निगरानी करते रहें 5 फेरोमोन ट्रैप प्रति हे0 की दर से खेत मे लगायें। आवश्यकतानुसार नीम गिरी 4 प्रतिशत अथवा एच0एन0पी0वी0 250 एल0इ0 250–300 मिली0 300–400 लीटर पानी मे घोलकर प्रति हे0 की दर से सायंकाल छिड़काव करके कीट का जैविक नियंत्रण करें।

		➢ मटर में स्टेम फ्लाई (तने की मक्खी) के नियंत्रण हेतु क्लोरेन्ट्रानिलीप्रोल कीटनाशी की 60 मिलीलीटर मात्रा को 200 लीटर पानी में घोल बनाकर प्रति एकड़ की दर से छिड़काव करें । ➢ सब्जियों में कीटों के नियंत्रण हेतु नीम गिरी 4 प्रतिशत (40 ग्रा0 नीम गिरी का चूर्ण 1 ली0 पानी में) का घोल बनाकर 10 दिन के अन्तराल पर छिड़काव करना चाहिए। ➢ बैगन की फसल में कलंगी एवं फल बेधक कीट के नियंत्रण हेतु 10 मीटर के अन्तराल पर प्रति हेक्टेयर में 100 फेरोमोन ट्रेप लगाकर वयस्क नर कीट पकड़ कर नष्ट कर देना चाहिए व क्लोरेन्ट्रानिलीप्रोल कीटनाशी की 80 मिलीलीटर मात्रा को 200 लीटर पानी में घोल बनाकर प्रति एकड़ की दर से 10 दिन के अन्तराल पर आवश्यकतानुसार छिड़काव करना चाहिए। ➢ टमाटर में फल बेधक सूड़ी के नियंत्रण हेतु एजाडिरैक्टिन 0.15 प्रतिशत की 2.5 लीटर मात्रा को 500–600 लीटर पानी में घोलकर प्रति हे0 की दर से आवश्यकतानुसार 8–10 दिन के अन्तराल पर छिड़काव करें। ➢ फूलगोभी, पत्तागोभी में डायमंड बैक मोथ की निगरानी हेतू फेरोमोन प्रपंच 3–4/एकड़ लगाए व बैसिलस थूरिनजिएन्सिस (बी0टी0) 1.0 किग्रा0 प्रति हे0 की दर से 400–500 ली0 पानी में घोलकर आवश्यकतानुसार 10–15 दिन के अन्तराल पर सायंकाल छिडकाव करना चाहिए। रस चूसने वाले कीटों के नियंत्रण हेतु इमिडाक्लोप्रिड 17.8 प्रतिशत एस0एल0 3 मिली0 को 10 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें। ➢ आम में मिली बग कीट के नियंत्रण हेतु आम के तने के चारों ओर गहरी गुड़ाई करके मिथाइल पैराथियान 2 प्रतिशत चूर्ण की 200 ग्राम मात्रा प्रति पेड़ की दर से मिट्टी में मिला दें तथा मुख्य तने पर 400 गेज की पालीथीन की 25 से0मी0 चौड़ी पट्टी बांधे और पट्टी के ऊपरी तथा निचली सिरे पर ग्रीस लगाकर सील कर दें। यदि कीट पेड़ पर चढ़ गये हों तो इमिडाक्लोप्रिड 17.8 प्रतिशत एस0एल0 250 मिली0 की मात्रा को 600–750 लीटर पानी मे घोलकर छिड़काव 15 दिन के अन्तर पर 2–3 बार करें।
5-	**पादप रोग प्रबंधन**	➢ वर्तमान मौसम के मध्यनजर आलू, टमाटर, सरसों व अलसी की फसलों में झुलसा रोग आने की सम्भावना हैं किसान भाई फसल की नियमित रूप से निगरानी करते रहे रोग के लक्षण दिखाई देने मैन्कोजेब अथवा क्लोरोथैलोनिल (कवच), अथवा एण्ट्राकोल (प्रापीनेव) 2 ग्रा0 प्रति लीटर पानी का घोल बनाकर 10 दिन के अन्तराल पर छिडकाव करें। ➢ वर्तमान मौसम के मध्यनजर सरसों की फसल में सफेद रतुआ रोग आने की सम्भावना हैं रोग के लक्षण दिखाई देने पर रोग ग्रस्त पत्तियों को तोड़ कर नष्ट कर दें तथा मेटालेक्जिल + मैन्कोजेब दवा का 2 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करें ➢ गेंदे की फसल में पुष्प सड़न रोग के संक्रमण की निगरानी करते रहें। यदि लक्षण दिखाई दे तो कार्बेण्डाजिम 1 ग्राम/लीटर अथवा मैन्कोजेब का 2 ग्राम प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें। ➢ किसान भाई गेहूं की फसल में पर्णीय झुलसा के लक्षण दिखाई देने पर नियंत्रण हेतु प्रापीकोनाजोल 1 मिली. प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर पर्णीय छिड़काव करें।

6.	**बागवानी. प्रबंधन**	**पाले से बचाव :–** जनवरी माह में भी दिसम्बर माह की तरह पाला पड़ने का खतरा रहता है। इसलिए पौधों को खासतौर पर छोटे पौधों को तथा नर्सरी को टाटियों, बोरियाँ तथा छप्पर से ढ़क दें। पाले वाली रात बाग में सिंचाई अवश्य करें। **कांट – छांट तथा छिड़काव :–** इस माह में अंगूर, नींबू प्रजातियाँ आडू तथा अनार में कांट–छांट अवश्य करें। नींबू प्रजातियों में सूखी तथा रोग ग्रस्त शाखाओं या टहनियों को अवश्य काटें। कांट–छांट के तुरन्त बाद एक से.मी. से मोटी टहनियों पर बोर्ड्रेक्स पेन्ट का लेप करें तथा पूरे वृक्ष पर कॉपर आक्सीक्लोराइड 300 ग्राम/100 लीटर पानी में घोल बना कर छिडकाव करें। **खाद एवं उर्वरक :–** पौधों की उम्र तथा किस्म के अनुसार गोबर की खाद तथा उर्वरक दे। **नीबू वर्गीय फल :–** ➢ बागीचों की साफ–सफाई करें। ➢ रोगग्रस्त एवं सूखी टहनियों को अवश्य काटे। कटे भागों पर बोर्डेक्स पेस्ट लगा दें। इसके पश्चात 0.3 प्रतिशत कॉपर आक्सीक्लोराइड का घोल बनाकर छिड़काव करें। ➢ किन्नों जाति के फल इस माह के अन्त तक या 10 फरवरी तक तोड़ने चाहिए। फल के डण्ठल को फल से बहुत करीब से काटें। जूट की बोरियो या बांस की टोकरी की अपेक्षा गत्ते के डिब्बे या लकडी के बक्से से विपणन के लिए भेजे। फलो को दूर स्थान पर भेजने के लिए कार्टून सबसे उचित है। इसमें रखने से पहले हर फल पर कागज या टीशू पेपर (डाई फिनाईल से उपचारित) में लपेट कर पैंकिग में रखने से ज्यादा समय तक फफूँद या सड.ने से सुरक्षित रखा जा सकता है। किन्नों के फलों को सामान्य तापमान पर 50 से 55 दिन तक पॉलीथीन बैग (100 गेज) में पानी से धोने तथा कपड़े से साफ करने के पश्चात रखा जा सकता है। vke% ➢ थालों की गुड़ाई कर सिंचाई करें। ➢ पिछले माह यदि खाद और उर्वरक नहीं दिए है तो इस माह भी प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ, पंचम या अधिक वर्षीय पौधों में क्रमशः 15, 30, 45, 60 व 75 किलो प्रति पेड़ गोबर की खाद के साथ साथ 250, 500, 750, 1000 व 1250 ग्राम सिंगल सुपर फॉस्फेट प्रति पेड़ थालों में दें। चौथे, पांचवें वर्ष या अधिक पुराने पेड़ों में क्रमशः 250 व 500 ग्राम म्यूरेट ऑफ पोटाश भी देना चाहिए। ➢ उर्वरक देने के पश्चात पौधों में सिंचाई भी करें। **बेर :** ➢ इस माह में बेर की सिंचाई अवश्य करें ➢ प्रथम पखवाडे में फल मक्खी एवं बालों वाली सुण्डी से भी रोकथाम के उपाय करें। ➢ कांट–छांट तथा खाद देने के तुरन्त बाद सिंचाई दें। iihrk% ➢ इसके पौधों में आवश्यकतानुसार निराई–गुड़ाई और सिंचाई करते रहे. इसके

		तनों के चारो तरफ मिट्टी चढाने के उपरांत ही सिचाई करें जिससे पानी तनों को ना छुए। ➢ गत माह यदि उर्वरक नहीं दिया है तो इस माह प्रति पौधा 30–40 ग्राम यूरिया,150–200 ग्राम सिंगल सुपर फॉस्फेट तथा 50–75 ग्राम म्यूरेट ऑफ पोटाश प्रति पौधा थालों में देकर हल्की सिंचाई करें। तैयार फलों को तोड़कर विक्रय हेतु बाजार भेजें। vukj ,oa vkaoyk% इन फलों के बगीचों की साफ–सफाई, गुड़ाई और खाद देकर सिंचाई करें। तैयार फलों की तुड़ाई कर विक्रय हेतु बाजार भेजें। ve#n% इसके थालों की निराई–गुड़ाई और समय समय पर सिंचाई करें। पके फलों की तुड़ाई कर विक्रय हेतु बाजार भेजें **अंगूर :** कांट–छांट का उपयुक्त समय जनवरी के मध्य से फरवरी के प्रथम सप्ताह का है। कांट–छांट के तुरन्त बाद कटे भाग पर बोर्ड्रक्स पेस्ट लगा लें पूरे बाग को कांट–छांट के उपरान्त 0.2 प्रतिशत बाविस्टीन का छिड़काव करें। **खाद एवं उर्वरक :–** कटाई छटाई के तुरन्त बाद खाद एवं उर्वरक दें। **प्रसारण :** अंगूर प्रसारण का अन्य तरीका करना विधि द्वारा ही है। एक वर्ष पुरानी शाखा से कलम तैयार करें। कलम लगभग 30 सेमी लम्बी तथा गहरी मोटाई की होनी चाहिए।
7.	**वानिकी प्रबंधन**	➢ पूर्व रोपित पौधों की उचित देखभाल करते हुए आवश्यकतानुसार निराई गुड़ाई, सफाई और सिंचाई की व्यवस्था करें ताकि पेड़ों में अच्छी वृद्धि हो सके। ➢ कृषि वानिकी के अंतर्गत लगाए गए पेड़ों के थालों की निराई गुड़ाई, सिंचाई और निचली टहनियों की छटाई तेज धार वाले औजार से काटें करें ताकि गाँठ मुक्त गुणवत्ता वाली लकड़ी प्राप्त हो और कृषि फसल पर छाया का प्रभाव कम किया जा सके। ➢ उच्च्य उत्तरजीविता दर सुनिचित करने हेतु सागौन और शीशम के एक साल पुराने पौघों की जड़ौल (रूट–शूट कटिंग) व स्टंप को पौधशाला में तैयार करें । इस कार्य हेतु पौध की मोटाई अंगूठे के बराबर (2.5से0मी0), तने की लंबाई 1.5 से 2.5 से0मी0 तथा मूसला जड़ की लंबाई 15 से 20 से0मी0 रखें। अन्य जड़ों को सावधानीपूर्वक काट दे। तदोपरान्त, तैयार जड़ौल को पॉली बैग में रोपित करें।

वैज्ञानिक सलाहकार मंडल–

1. डॉ जी. एस. पंवार	7. डॉ मयंक दुबे
2. डॉ दिनेश साह	8. डॉ अमित मिश्रा
3. डॉ ए.सी. मिश्रा	9. डॉ दिनेश गुप्ता
4. डॉ ए.के. श्रीवास्तव	10. डॉ पंकज कुमार ओझा
5. डॉ राकेश पाण्डेय	11. डॉ सुभाष चंद्र सिंह
6. डॉ विवेक सिंह	